International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में अभिव्यक्त समाज और संस्कृति

राजेश कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
डॉ० राजेन्द्र सिंह
आचार्य, हिन्दी–विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

साहित्य समाज का दर्पण है, समाज में जो घटित होता है, उसका प्रतिबिम्ब साहित्य में दिखाई देता है। जीवन की वास्तविकता को साहित्यकार सदैव लिखता रहा है। हमारी वर्तमान पीढ़ी को भविष्य में आने वाली पीढ़ी से जोड़ने की कड़ी बच्चे होते हैं। बाल–साहित्य, हिंदी साहित्य की एक सशक्त विद्या है। बाल–साहित्य बच्चों को केंद्र में रखकर लिखा जाने वाला साहित्य है। यह साहित्य प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक निरन्तर लिखा जा रहा है। स्वतन्त्रता से पूर्व बाल–साहित्य को दोयम दर्जे का साहित्य समझकर बड़े–बड़े साहित्यकार इसे लिखने से कतराते थे, लेकिन वर्तमान में बाल–साहित्य को बड़े से बड़ा लेखक भी लिखकर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। वर्तमान में अनेक साहित्यकार बाल–साहित्य लिख रहे हैं। कुसुम डोमाल, प्रमाश मनु, हरिकृष्ण देवसरे, सुरेन्द्र विक्रम, मनोज कुमार आदि इन बाल–साहित्यकारों में एक प्रमुख नाम डॉ० परशुराम शुक्ल का भी है।

डॉ० परशुराम शुक्ल ने बाल–साहित्य में काव्य सृजन, प्रेरणा, कलात्मक विनियोजन समुन्नत विचार, युग प्रेरक संदेश, मूल्य बोध तथा जीवन मूल्य आदि से चित्रित किया है। शुक्ल ने वर्तमान समय में बच्चों में बढ़ रही विभिन्न परेशानियों का आंकलन करते हुए, आंकलन करते हुए, कहानी साहित्य की रचना की उसमें प्रेरणात्मक, नैतिक, शिक्षाप्रद, मनोवैज्ञानिक, मनोरंजनपूर्ण कहानियों के माध्यम से बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए बाल साहित्य को नयी दिशा दे कर इस क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। इन्होंने बाल–साहित्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर सूचनात्मक साहित्य भी लिखा और बाल साहित्य को ज्ञान–विज्ञान के अनोखे रूप में साक्षात्कार करवाया। मूल रूप से समाजशास्त्री होने के बावजूद शुक्ल जी ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, धारावाहिक एवं सूचनात्मक बाल साहित्य तथा ज्ञान–विज्ञान की सभी विधाओं पर लेखनी चलायी। श्रीशुक्ल की अब तक १५० से अधिक पुस्तकें और लगभग ६००० हजार स्फुट रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है। बाल कहानियों पर उनकी लगभग 13 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। शुक्ल जी साहित्य के क्षेत्र में निरंतर सृजनरत रहने वाले कृति पुरुष हैं उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में हमेशा आशावादी बनकर विषम परिस्थितियों में भी विजय हासिल की। डॉ० परशुराम शुक्ल का संपूर्ण बाल–साहित्य उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व को गौरवपूर्ण बनाता है। मूल रूप से समाजशास्त्री होने के बावजूद श्रीशुक्ल ने बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल नाटक एवं एकांकी, बाल धारावाहिक एवं सूचनात्मक बाल–साहित्य तथा सामान्य विज्ञान की सभी विधाओं पर सृजनात्मक लेखन किया है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

श्री शुक्ल के लेखन में भारतीय संस्कृति की झलक दिखायी देती है। भारतीय संस्कृति की मशाल के आलोक में ही उन्होंने अपने देश के बच्चों को नई राह एवं नई दिशा दिखलाने का प्रयास किया। उन्होंने परम्परा एवं अतीतों से ऊर्जा अवश्य संचित की किंतु उनकी सोच वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न थी। परम्परा और आधुनिकता के जीवन तत्वों का सामंजस्य करने वाला उनका साहित्य उनके उदारवादी व्यक्तित्व का द्योतक है। परशुराम शुक्ल अद्भुत प्रतिभा के धनी है उन्होंने बाल साहित्य को अपनी लेखनी स्मरणीय स्वरूप में सुधारा है।

डॉ० परशुराम शुक्ल ने बालरूचि को ध्यान में रखते हुए बाल कहानियों का सृजन किया। बाल साहित्य में मनोरंजन, विचार, नैतिकता, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता इत्यादि सभी तत्वों का होना आवश्यक माना जाता है। आधुनिक स्वच्छंद रूप में चित्रण, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति प्रेम, जीव जंतुओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण समाज व्यवस्था तथा राष्ट्रीय एकता को कायम रखने वाले कहानी लेखन आज के बालकों के लिए अति आवश्यक है। श्रीशुक्ल ने अपनी बाल कहानियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए बच्चों को वैज्ञानिक आविष्कारों के संदर्भ में मनोरंजनपूर्ण कहानियाँ लिखकर उनके सामान्य ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास किया है। जो उनके कहानी लेखन की वस्तु–विधान को सशक्त बनाने में सहायक है।

डॉ० परशुराम शुक्ल स्वयं जीवन मूल्यों पर आस्था एवं विश्वास रखने वाले व्यक्ति है। साहित्य की रचना प्रक्रिया जीवन सापेक्ष है। कोई भी साहित्य युगीन जीवन मूल्यों से निरपेक्ष नहीं होता। क्योंकि साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण जीवन मूल्यों से ही होता है। प्रत्येक साहित्यकार पर तत्कालीन जीवन और युगीन परिस्थितियों पर उसके आचार–विचार रहन–सहन, आदशौं, सामाजिक परिवेश और मान्यताओं का प्रभाव पड़ता है जिसका प्रतिबिम्ब उसके साहित्य में नजर आता है। जीवन मूल्यों में परिवेश तथा परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन आना अनिवार्य है। शुक्ल जी भारतीय परम्परा के पक्षधर हैं वे परम्पराओं को मानते तो है लेकिन रुढ़िवादी परम्परा को नहीं, गतिशील परम्परा को। उनका मानना है कि परम्पराओं को यदि समय और परिस्थिति की तर्क व कसौटी पर न कसा जाए तो वह मात्र रीति बन कर रह जाती है। उनमें कट्टरता और रुढ़िवादिता का समावेश हो जाएगा। उन्होंने अपने कहाती लेखन में विषय का प्रतिपादन आज के वैज्ञानिक चिंतन पद्धति के आधार पर ही किया।

कहानियों में मानव मूल्यों की प्रतिस्थापना की गई है। शुक्ल जी ने अपने काव्य में मूल्यहीनता की स्थिति को स्पष्ट करने के साथ नवीन मूल्यों की प्रतिष्ठा भी की है शुक्ल जी की मूल्य दृष्टि अत्यंत गहरी है। अपने समय की समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर श्रीशुक्ल ने उनके स्तरों पर मूल्यों को परखा है और समाज के हितार्थ नये मानवतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल दिया है।

हिंदी बाल–साहित्य के संपूर्ण ऐतिहासिक संदर्भ और परिपेक्ष्य में डॉ० परशुराम शुक्ल का सीधा जीवन संपर्क रहा है। शायद इसीलिए उनकी काव्य भाषा और शब्द विधान भी अनेक समस्याओं से जूझता हुआ नित नवीनताओं की ओर बढ़ता है। उनके लिए भाषा केवल संपेषण का माध्यम नहीं अपितु संवेदनाओं को पाठक तक पहुंचने की प्रक्रिया है। शुक्ल जी ने बच्चों

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

को गुदगुदाने वाली भाषा को बड़ी सहजता और सरलता के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने प्रसंगों में तत्सम तदभव, उर्दू अंग्रेजी एवं विदेशी शब्दों को प्रयुक्त किया है। इनके बाल काव्यों में रागात्मकता, लयबद्धता, सुंदरता, तुकात्मकता, संगीतात्मकता आदि गुण देखे जा सकते हैं। साथ ही शब्द चयन, शैली, प्रतीक और बिम्ब आदि सभी का यथार्थ झलकता है। अलंकार योजना उनके काव्यों में सहज रूप में प्रयोग हुआ है कहीं–कहीं छन्दों की छटा भी दर्शनीय है। शुक्ल जी के काव्य में निहित मधुर शैली, ललित शैली, मुहावरेदार शैली एवं ललित प्रतीकात्मक शैलियों के दर्शन होते हैं। शुक्ल जी उच्चकोटि के शैलीकार तथा एक सफल बाल–साहित्यकार हैं।

वरिष्ठ बाल–साहित्यकार डॉ० परशुराम अभी जीवित है, बाल–साहित्य जगत को उनसे अभी भी अपेक्षाएं है आज भी वह सक्रिय है, व साहित्य की सेवा में सृजनरत है। शुक्ल जी ने कहानियों में बाल–साहित्य लिखकर देश की भावी पीढ़ी, बच्चों के लिए कहानियाँ लिखकर अनेक चुनौतियों को स्वीकार है। आज बाल–साहित्य को एक ऐसे स्थान पर लाकर खड़ा किया है जो अविस्मणीय है। आज हजारों की संख्या में बाल–साहित्यकार बाल–साहित्य लिख रहे हैं, इस श्रेणी में वे अग्रणी है। उनके द्वारा लिखित सभी आलेख बाल पत्र–पत्रिकाओं में समय–समय पर प्रकाशित होते रहते हैं।

परशुराम शुक्ल हिंदी के श्रेष्ठतम बाल साहित्यकार है। इन्होंने इतिहास, पुराण, धर्म–दर्शन, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रकृति, पर्यावरण तथा समकालीन संदर्भों पर बाल साहित्य की रचना की है। इनके लेखन की सहजता और सरलता और प्रभावशक्ति पाठक को आकर्षित करती है। इनकी बहुरंगी बाल कहानियों की समन्वय विवेचना और उस पर स्तरीय शोध कार्य अभी प्रतिक्षित रहा है। इनकी बाल रचनाओं में जो ताजगी और सादगी हैं।

शुक्ल की कहानियों में प्रेरणा, प्राचीन बाल कहानियाँ, लोककथायें ऐतिहासिक, क्रांतिकारी, वैज्ञानिक, परियों की बाल कहानियाँ, नैतिक, आदि के माध्यम से शुक्ल ने राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम, नैतिकता, मनोविज्ञान, बाल–विकास समाज, संस्कृति व बच्चों की नयी–नयी वैज्ञानिक सोच और बाल विकास को शुक्ल की कहानियों में उद्वेलित किया गया है।

संदर्भ सूची

1. परशुराम शुक्ल, इंद्रधनुषी कहानियां, साहित्यगार, जयपुर, 2011
2. परशुराम शुक्ल, कर्मयोगी, पॉपुलर बुक डिपो, जयपुर, 2010
3. परशुराम शुक्ल, क्रोध का बीज, श्रेया प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
4. परशुराम शुक्ल,सोने का हिरण, पार्वती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
5. परशुराम शुक्ल, भारतीय वीरांगनाएं, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 2005